नहीं प्रबोधचन्द्रोदय

ऋतुराज

धरती प्रकाशन

वशीधर मिश्र की स्मृति मे

मैं तुम्हारी किताब बन कर उन्हें समझाऊँगा, जब पढ़ूँगा जो तुम कभी नहीं कह सके।

एक दिशा में लगातार गिरते हुए तुम अस्त हो गये, लेकिन रात की स्वायत्तता ने तुम्हें खोलकर रख दिया।

कौन इतना कंजूस हो सकता है जो निरापद निर्जन अंधेरा होने के वक्त अपने अतीत को मुड़ खड़ा करके चारों तरफ से नहीं देखे ?

एक वक्त वह भी होता है जो पानी को उद्धत अधोगति में बह जाने देता है और जिसके निकल जाने के बाद पत्थरों से नयी आकृतियां निकल आती हैं।

तुम्हारा वक्त गति में बिल्कुल ठप्प, निर्द्वंद्व पड़े रहकर सा साक्षात्कार और प्रगट होने का भजन रहा है।

मैं तुम्हें शब्दों में नहीं, उनके बीच के परस्पर अर्थों के सम्बन्धों में खोजना चाहता हूं।

एक आत्मीय प्रेमालाप का प्रारम्भ किसी समानधर्मा की मृत्यु के बाद होता है। अब मैं पीछे लौट कर देख सकता हूं, कोई जल्दी नहीं है, कोई अर्थका भी नहीं कि उस जीवित मनुष्य में अचानक रास्ता बदलने की होती है।

कम से कम एक दिशा तो तय है। पीछे लौटने की। सारे ऊबड़खाबड़ रास्तेवहां जाकर मिलते हैं। मैं घर लौटूं भी तो कोई यह कहने वाला नहीं कि तुम बहुत दूर और गलत निकल गये थे।

अब सही जगह पीछे लौटना भी आगे जाने जितना ही सार्थक हो सकता है।

क्रम

वह 9 / यही सच है 10 / पेड़ 11 / फुनगी 12 / सजीवनी 13 / सड़क 14 / बादल 15 / पहिया और पाव 16 / थक कर रुक जाना 17 / स्मृति 18 / गेंद 19 / उसकी बेटी 20 / शातिपाठ 21 / यह है स्वराज 22 / धोखा 23 / हाथ 24 / एक प्रसन्न आलोचक की सलाह 25 / उपसहार 27 / एक सेब दो बिस्कुट 28 / खामोशी 29 / नही प्रबोधचन्द्रोदय 30 / जाग लिखी 32 / सकस 34 / सुन्दर शात और सौम्य 36 / विद्रूप 37 / दूर चली गयी वो 38 / मलयज 39 / औरत और खाट 40 / जलना 41 / कविता की सुबह, भोपाल 42 / बशीधर मिश्र 43 / दरवाजा नही था 44 / हत्या एक खबर 46 / यह आदमी 47 / जब चीख डूब गयी 48 / एक कटे पेड की कहानी 49 / बकरी और बच्चा 51 / एक दिन 53 / सुबह और घाट पर उनका स्नान 55 / शहद 56 / ड्रेगन फ्लाई 58 / अयात्रा 59 / मरोकार 61 / सूरज श्मशान और हड्डिया 62 / जगल के दावेदार 64 / श्यामली 67 / करना होगा 69 / विखण्डित 71 / काल मगया 73 / पिरामिड 83 75 / एक बुढिया 78 / तीसरा पक्ष 79 / दशन 80 / एशियाट 81 / वे डरते हैं 83 / अभी कितने और आश्चर्य होंगे 84 / बिना कथा के 86 / हवाई यात्रा 87 / जलप्लावन 89 / प्रतिरक्षा 91 / प्रपच तत्रम् 92 / केवल आख बना देने से क्या होना है 93 / जनान्तिक 94 / गगा 97 / जमीन 98 / सूर्यास्त 2000 100 /

नही प्रबोधचन्द्रोदय

वह

इल्ली के रूप में से निकला
झीना क्षीण और वायवी प्रतिरूप
प्रगट हो गया
घास पर एक भीगा सतुलित स्पश

लेकिन अभी तक तितली नही बना वह।

उड़ती कई तितलियाँ उसे
कि वह क्या नही बन सका तितली
दो पखो की ऐयाश धड़कन एक
अपनी धरती पर अपने ही सौदय की गरिमा—

वह इस भव्यता से कई बार गुजरा
लकिन नही बना

अभी तक तितली जसा भी नही बना।

यही सच है

यही सच है
जो है काला मेघ।
आये दिन विपरीत रति में
करती अट्टहास सौदामिनी क्रूर निमम—
जो भीगता है
शायद इनसे ईर्षा करता है।

कहा से अचानक टपका ?
किधर तडका कौंध का पुच्छल तारा एक ?
धूप बरों से खायी हुई
भागती गायब होती
यही विधान है।

एक बुढ़िया
इस महानगर म याद करती
लापता अपने बेटे को
और वह बूढा
एक टुकडा नींद के बाद
उसे बार बार चादर उढाता
यही सच है

पेड

जिन लोगा ने पड लगाय थे
उनस पूछो
पहल कौन मुरझाया ?

नि सन्दह वह आदमी ही रहा हाेगा ।

शायद वह पहल से ही था भूखा
सूखा थका हारा
फिर उसके हाथा म दे दिय पेड
नगी मिट्टी म परचत हुए
अपनी जडें

उन्होने टागें पसारन के लिए
चाही थी थाडी सी जगह
लकिन गम चट्टानो मे भीच दिय गय
उनके हाड

वे लोग जानते थे
कभी कभी एसा ही हादसा होता है
जो कुछ करना चाहते हैं
वे बध जात है
और जो लोग कहते हैं
पडो को सीचो उनमे पानी दो
वे उन्हें प्यार तो क्या
पहचानते तक नही

जिस तरह एक पहाड
किसी खेत के सिर पर चढकर कहता है
गहरा गोडो हल चलाओ
बीज रखो तैयार
शायद मुझम से निकलकर एक झरना
तुम्हारी तरफ मुड जाये

फुनगी

शाखा के समानान्तर
एक कीड़ा चढ़ गया
सूखी फुनगी पर
एक दूसरी फुनगी पर जाने के लिए उसे लगानी पड़ी छलांग

इन दोनों फुनगियों से दूर
एक तिनके के सिरे पर
बिछाए बैठा है कोई जाल
अनवरत प्रतीक्षा है धैर्य है विश्वास है
जिससे भी गलती होगी वही बनेगा भोजन

शाखा के समानान्तर
फैल गयी है झील
लहरों का इन तीन घाटों पर
रूपक ताल में गाना
शाखा के समानान्तर
दूर से आती हुई एक आवाज सुन रहे हैं कान

वह कीड़ा
नीचे नहीं उतरने की कसम खाये
लगाता जा रहा है छलांग पर छलांग
और जाल बिछाए उसकी प्रतीक्षा में
कोई इतना 'बेचैन' हो उठा है

लगता है फुनगियों के क्षितिज पर
मिल गये हैं हिंसा और प्यार हिंसा और प्यार

संजीवनी

संजीवनी

जिसमें बहता हुआ खून
एकदम हो जाता है बंद
कैसी भी चोट हो
उसका रस तुरंत लगाने पर
सब ठीक पहले जैसा

लेकिन जब लगती है चोट
वह बेचारी
कहीं दूर पहाड़ पर
अपने निरर्थक अकेलेपन में
किसी ने जाने वाले की
प्रतीक्षा करती रहती है

सडक

सडक ले जाती है
जब उम गेकना हाता है
भीतर से टूट जाती है
बन जाती है एक चौडी दरार।

आदमी की आत्मा म
साधन की सीमाए गड जाती है
सडक जो पहल लेटी हुई थी
अब खडी होकर प्रतिरोध करती है।

कूदकर भरकर छलाग
जाडता है आदमी वह चौडी दरार
आश्चय ?
भीतर की आखे
सडक म दबी हुई देखती है

इसी दिशा म जा चुका है
एक पराजित आदमी
जब टूटी नही थी रीढ
जब छिल नही थे पाव
वह घिसटता हुआ अब तलक पहुच चुका होगा

वह खडी रहकर दख रही है
य बाद वाल लोग
उसके माथ क्या करत ह ?

वादल

दखकर गहरे दो बादल
ठहरे जैस बहरे
दखकर दो मौन शात
सूखी झील के खजूर
जिन पर अटका हुआ था मन
किसी चिडिया का हो जैस रगीन पख

दखकर सब कुछ देखकर
याद आती है गायब हुई उस भीड की—
वे लोग थ
जो बादला को चुप देखकर
चीखने लग जात थे
और तोड दत थ सूखी झील की वह नाव।

पहिया और पाव

भीषण दातदार पहिया
गम तपता
दाग लगाता
हड्डियो का चूरा जो उडता हुआ
आग की जलन म
नया पतनशील चेहरा बनाता

उफ कितनी बदहवासी है
कितनी दुबल हतोत्साहित यात्राए
छिन भिन्न होकर
खारिज हुई गाडियो के पीछे भागती है ।

पसीने म चुआती ठठरिया
सिर पर टीन का बेडौल बक्सा उठाए
मूज की खाट लादे कधो पर
निमम जलवायु की उठती लुक्क म
काम की तलाश के लिए दस को परदेस जैसा
अचीन्हा अजनबी की तरह देखती है
टिकुर टिकुर
पूछती कौन सी बस या कौन सा सिरफिरा मुह
जहाजपुर जायगा ?

हा होगा कही एक अनदखा कस्बा
जिस गाव के पतझड से उबारने के लिए
कोलतार गिटटी की सडक से जोडा जा रहा है

थक कर रुक जाना

थक कर चूर चूर हो गये और रुक गये
कविता भी रुक गयी
स्पंदित लेकिन ठहरी हुई एक जगह

कोई भी जगह हो सकती थी
ठहरते वक्त फर्क नही पडता
गक होते वक्त भी नही पडता फर्क
इतिहास लेखक कहते जो डूबा था
वह तर नही सका
इसीलिए एक जगह फंसा रह गया

खैर कविता जहां रुकती है
वह जगह बुरी नही होती
निष्प्राण सुंदरता
खुले बाल बिखेरे रचनात्मकता वगैरा वगैरा

भले ही व काल की अगति के विषय मे सोचे
और खुद की ठंडी भाटी संवदना के बाल नाचे
कविता के ठहरने की वजह
मेरी थकान थी
अटूट स्वेद प्रवाह के बीच लथपथ
मेरे गिरने की क्रिया से पहले
विनम्र पडाव की वह रात
जिसमे उसकी बहुत याद आयी

स्मृति

उलझ गयी वो लता
एक साप के नीचे
दौड चला फिर भी साप

ब द चारा तरफ स
इस कुज के दरवाजे
फिर भी निकल गयी लता
फोडकर नहर की ढोली

जिसे करना नही होता आजाद
वह इसी तरह छाटकर चला जाता है
जसे यह लता जस वह साप

कुज म अधेरे के आस पास
एक अस्पष्ट ध्वनि
सिमट कर रुक गयी
निर तर कम्पित होती
जिस जिद हाती है और करना हाता है प्यार
वह यही सा है
नही वह लता नही यह साप

गेंद

हाथ काट कर
दो कुचली जली टांगों में सहन है
भागो।

कैसी विषैली हँसती हुई वाणी
कैसा सुरक्षित जिरहबख्तर
अंग्रेजी बारूद से उड़ा दिया मेरा घर

भागो भागो।
क्योंकि अब तुम कुछ नहीं कर सकते
गुठले छीजते कंधे और घृणा में थूक गटकती
मरियल गर्दन
जान अटकी हुई गोली है बोतल में

सब उसके पंजे की दबोच के नीचे
भले ही रहा छटपटाता तराशता प्रतिपक्ष
या इंतजार करो।
नया हाथ उग आने का
भले ही कुछ भी नया सुख हो
दौड़ते हुए टाँगें मजबूत करने का

फिलहाल उसकी विजय हुई है
और तुम अपने बच्चे की लुढ़कती गेंद
उसे देने के लिए
खुद लुढ़क गये हो

उसकी बेटी

लडकी को जनमने के बाद
क्या वह मर गयी होगी ?

गोल रीठे जैसी दो आखे
बडी बडी
सोचने का सारा काम दखने से लेती हुइ
बोलते वक्त भी देखना
जसे दरवाजे पर ही फटते हो बम
दातो मे अनार नही
बीच आगन म चलते हुए अनार

लडकी को नीची फ्राक पहिनाने के बाद
क्या वह नाचना भूल गयी होगी ?

खोजती है मेरी आखे एक बगीचा
डूबा पानी म
छायाए ठिठुरती हुइ तर रही हैं—
उसने सोचा होगा हर साल पकते रहग फल
तोडकर खाते रहग जगली रास्तो पर
वह तब भूल गयी झमाझम बरसात
जब लौटना नही होता
जब कही रुककर खिडकी म
मकडी की तरह छिप जाना पडता है

क्या उसकी लडकी बडी हो गयी होगी ?
वह उसे उगता हुआ लाल चद्रमा दिखलायगी
क्या तब वह किसी से पूछगी
वह चादनी इतने दिनो म
पतझर के जगल की तरह लाल कसे हो गयी ?

शातिपाठ

ईश्वर नही है
कल्याण हा
ईश्वर तुम्हारी जेब म तह किया हुआ
कल्याण हो
ईश्वर तिजोरी की ठडी तार म बधा हुआ
कल्याण हो
सब तरफ गले म पडे हीरे के हार की आभा म
वह निलज्ज
कल्याण हो   कल्याण हा
मोटी धामू अगूठी के पुखराज जसा नग
और मल धोता
कल्याण हो   कल्याण हो
फूहडपन की देश सीमा तक सास बहू का झगडा
और शुभचिंतको की अश्लील सक्रिय साझेदारी
कल्याण हो
एक स्वप्नदष्टा दरिद्रनारायण के लिए
महगाई भत्ते की नई किस्त
कल्याण हो
यह भवसागर शक्तिमाता का आखेट बन
और निबल के दौडते हाफ्ते घिसटने का ऊसर
कल्याण हो   कल्याण हो
उडती हुई चिडिया की डुबकी हो हमारी मत्यु
कल्याण हो
छोटी मछली शान्ति से सबका भाजन बने
उसका कल्याण हो
सब भयमुक्त हो
कल्याण हो   कल्याण हो

यह है स्वराज

गध तितली बावडी की कोख स जमी
एक तितली सीलन की उठती गध स घबडाइ
सीढिया के बिना अपने पखो पर चढती
एक तितली खुली धूप म आयी

समय की टूटी बुज
जिसके धुर नीचे कच्छप राज
चौकन्ने निर्लिप्त पोज मे घात लगाए
कब होगा सम्पूण बलात्कार
यह है स्वराज यह है स्वराज

एक तितली विचारी रग घालती पानी मे
बिल्कुल चिकनी बिल्कुल निवसन
निकल बाहर आयी
कच्छप हसे और उनके गिरोह के शोहदाई
यह है स्वराज यह है स्वराज

मैं एक अकेली अबला हू
नष्ट सौदय की शेष छवि
एक तरल निष्कलुषता हू
सीलन पक से मुक्तप्राय
ऊपर उठती पवित्रता हू ।
सूनी बावडिया मे तुमने रौदा
उद्यानो म फसा फसाकर मारा
अकारण नही शायद इस आशका से
कि कही मैं न इतिहास रच जाऊ
जन जन को दिखलाऊ
यह है स्वराज यह है स्वराज

खोखा

खोखा रह गया
केवल एक खाली आकार
भग्न की टूटी खाली बोतलें पीपिया
प्लास्टिक की चप्पलें और हर माल पचास पैसे का।

जब उसकी दुकान को उन्होंने लूटा
व नियम को पोस रहे थे
जब उन्होंने उसे लाठियों से पीटा
वे नियम को भरपेट खिला रहे थ
जब उन्होंने उस पर जुर्माना किया
वे नियम को उच्च शिक्षा दिलाने की फिक्र म थ।

सिर्फ खोखा रह गया
आदमी की कटी पिटी आत्मा का
बाजार की नाली पर तहस नहस
और बुद्धिविलासियों म छिड़ी बहस
शहर का सौन्दर्यबोध कितना सुधर गया।

गली गली मोहल्लों म
अब खोखे ही खोखे बिखरे हैं—
लौटकर व उस खाती के पास जायेंगे
जिसके हाथ तोड़ दिये हैं नगरसुधारकों न

आखिर क्यों बनाता है वह खोखे?

हाथ

मशीन से एक हाथ कटा हुआ
दूसरा हाथ
मालिक की भैंस को नहलाता
दूध पहुंचाता सुबह शाम

एक साबुत हाथ
कितनी जल्दी भूल जाता है
अपने कामरेड का साथ
असावधानी से जो मर गया
और यह है कि स्वामिभक्ति से दब गया

अकेला एक कभी उठ सकेगा मुक्त होकर
शायद इस संभावना का अंत हो गया है

एक प्रसन्न आलोचक की सलाह

हारने म निराश न हो
हडिडया के जड तक दुखते रहने स
निराश न हो
ठोकर खाकर लुढकते हुए नाली म गिरने से
निराश न हो
इस खूखार शहर मे अवाच्छित अजनबी बने रहने म
निराश न हो
दुकानदार घृणा स होठ सिकोडकर मना कर द
निराश न हो
मुस्तैद सिपाही की तनी बदूक के आतक म
लटकते हुए चढने और गिरकर कुचल जाने से
निराश न हो
अफसर की तनी भकुटी और पायदान जैसी
अकिचनता बरश देने से
निराश न हो
दलित कविता की किसी मद स्थूल बुद्धि द्वारा
धज्जिया उडा देने से
निराश न हो

सुनो निराश टूटा हुआ आदमी
जन हो सकता है
जनवादी नही
वह अवाम के मोर्चे पर एक रोगग्रस्त व्यक्तिवादी है
प्रगतिवादी नही
इसलिए आश्वस्त हो और कह
जनता तैयार है
चारो तरफ आशा और उत्साह की रोशनी है
विचारधारा सजीवनी शक्ति है

ज्वर के भीषण ताप मे भी वहें
सब स्वस्थ हैं
इस निर्णायक सघर्ष म
जनता की विजय हो रही है
निराश न हो
शका न करें
भयभीत न हो

पीडा महज एक प्रतिक्रियावादी शब्द है

उपसहार

कट गयी है वह जड
जिस पर रखते पाव
सही दिशा का होता था ज्ञान।

सूख गयी है टहनी
जिस पर कभी चिडिया झूलती थी
खुलते थे पख हरी लरजती पत्तिया के बीच।

खो गये है बीज
जिन्हे मिट्टी पहले प्यार के चुबनो की तरह
छिपा लेती थी दिल म।

छिप गये हैं
स्मृति के सभी नक्षत्र
घुप गये थे कभी जिनमे उल्लासो के
तीव्र गतिमान राकेट।

वे राकेट सभी
धरती के नियत्रण कक्ष की खराबी से
गिर गये हैं अदृश्य अनजान धरातल पर।

आधा खुला मुह किसी ज्वालामुखी का
देखता है राह
कब औंधे मुह उसमे गिरे
इस मन की चाह।

एक मेब दो बिस्कुट

आखिर उसकी जीत हुइ ।

मरा पूरा दिमाग इस सडी बहस म
खा चुकन क बाद
वह बाता भूखा हू
और मर भीतर बाकी बचे शरीफ आदमी ने
उस बच्च के लिए रखा सब और दो बिस्कुट द दिय ।

उसन चाकू स चीरा सब
दाता मे कुतरी बिस्कुटें
और बाला आलोचना मे छह हजार केलारीज की जरूरत पडती है ।

खामोशी

खामोशी किसी चीख का नाम है
खामोशी किसी दुघटनाग्रस्त शोर की दलील है
खामोशी केन्सर से मरती हुई लडकी का ढका चेहरा है

लेकिन जब खूब महनत के बाद थक कर
हम उसे नीद म चलत हुए सुनत है
वह एक गीत है खिले सफेद कमलो स भरी झील का
वह चान्नी के हारमोनियम पर गायी एक गजल है
धीरे धीर साम वे पर्दों म मुनिया चिडिया की तारकशी

खामाशी एक तयारी है फल बनन की
कधारी अनार के दानो की खिलखिलाहट खामाशी ही तो है
जब
मिले हुए होठ भी लाल लाल होकर बहुत कुछ कह देत है

जमीन पर आदमी के लम्बे कारावास म
खामाशी शब्दो का फलो म बदलता है
उनके बीच चलती नही है बल्कि उनकी घेराबदी करके
उन्हे बोलना सिखलाती है

बिल्कुल अनार की तरह
या तुम्हे सीताफल पसद हो तो वही समझ लो

भीतर की छिपी रगत होठो पर आकर
समझदार आख का इतजार करती है

नही प्रबोधचन्द्रोदय

तुम्हारे सार जीवन मे
नही हो सकी वह सुखद बात
गुच्छे फूलो के झर गये
दीवार पर

उन्हे किसी को दे देन म एक फूल
बहुत प्रतिरोध था
तुम्हारा द्वन्द्व उनसे तनिक-सा भी
सुदर छीन लेने का
नही हुआ समाप्त

कई बार चीखती हुई एक हवा
किसी पख के पुछे रग म
उड चली
दीखा आता हुआ एक सुगधित सपना
फिर उसम चलता हुआ
आया काटो का एक कालपुरुष
एक स्त्री जहरीले तीरो को
आगे करती
पहिने हुए हिंसा के आभूषण

दश्य कुछ आकपक था
जब इनका तुम्हारे भीतर छिपे
मोह के प्रेतो ने
अभिवादन किया
नही बचा तुम्हारे जीवन म
एक भी फल विवेक का

मूढ बनकर देखते रहे व
तुम्हे नीचे गिरत हुए

टोक्ते नही थ
हसत थे तुम्हारे गिरने को अपनी विजय मानकर

जोग लिखी

"विवर
मनी आडर भेजूगा
दा प्रतिया भेजे
एक ख़ुद पढ गा दूसरी किसी मित्र का
अगर बिक गयी ता
वरना रिम्क ही सही।

कविवर ग्राति यू भी नही कही
लेकिन कविता मे चीखते है प्राण
रचन से लगता है
जा भविष्य म दूर तक भी दिखाई नही देता
वह वनमान के दिमाग म फटता है अनायास—
वतमान ही ता है कविता
केवल याजनाआ आह्वाना के प्राग्राम की रूपरेखा
टालू त्रियान्विति
आर आत्मताष के त्रिए कुछ रगीन शब्द पकडे
फडफडाती तितली

कविवर
बहुत लिखें लिखत चल जाए
जीवन बहुत सस्ता आर रीढहीन
पर न जान कितना मूल्य मिल मरणापरान्त
आज जा दुखान्त पत्नी बहन बेटी के लिए
वही स्मतिपक्व सुखान्त
क्या पता हो जाय हा नाय
मिलन पुरस्कार आर प्रतिभा का
जीवन का कोढ बदल जाय फूला की घाटी म
क्या पता क्या पता

स्वर्णिम स्वर्गिक ऐतिहासिक गीत
बस, बस, लिखते ही चले जाए

कविवर, विरोध का भी पक्ष बन
शायद सत्ता के चक्रव्यूह मे घुस सकें
भेद न कर मरें
टूटी औपचारिक मित्रता का
बचपन का मन्ना
वह मासूम
अब सीधे गर्भगृह म रानी तक पहुच गया
कविवर, आपको क्या हो गया
पगडडी पर बैठ विक्षिप्त
कागज की लीरो का ठोसा दत
बहुत जल गया जल गया।

कविवर, इतनी जल्दी ही अग्नि का तेज
लुप्त हुआ
पहचानने क बाद भी यह अधेर
बहुत हो अभी कहा लुप्त हुआ लुप्त हुआ
कविवर, लौटकर जब
पहुच सकोग न घर
कहोग सत्ता स कभी नही लगा डर
लेकिन उन आखो म है डर
जिन्हें हसते हुए देखने के लिए सोचत
काश इस महीने कहीं स आ जाना मनी आर्डर

सकस

सकस ही समग्र जीवन है।

मनुष्य और पशु की अद्भुत सगति म
यह सष्टि की असीम ऊजा का मचा है।

सकस म आदमी कौशल म रचता है
आकषक पराक्रम
और पशु आदमी स शीक्षित ह
वह सब जो पशु क आदमी और आदमी के
ब्रह्म होने का उपक्रम है।

सकस एक अत्यन्त सप्रेषणीय भाषा है।
साहस और आविष्कार का सतुलन है।
सकस मे निराधार झूलते त्रिशकु की बचनी नही
बल्कि आकाश की ओर एक प्रसन्न छलाग है
यह कोई काल जादू का टोटका या चमत्कार नही
बल्कि आग से हसते हुए खेलने का करतब है।

सकस सदव धडकता हुआ हृदय है।
इसका प्रत्यक रक्तकोष धमनियो की खौफनाक सुरगो म
लगातार चक्कर खाता है।
सकस एक सहस्रदल कमल है
जिसके विराट तत्र म सारे शक्तिशाली चक्र
सुषुम्ना को जाग्रत करते है।
सुषुम्ना सकस की वह लडकी ही तो है
जो साहस भरी साधना से प्रतीक बन गयी है मोक्ष का।

सिफ साहस और कौशल के द्वारा

लड सकता है मनुष्य अपनी तुच्छता और शोषित स्थिति से
सिफ 'अचरज' की निरतर रचना ही
निलज्ज और दभी शासक के मन म हीनता भर सकती है,
सिफ कई साहसी सजग जीवो का परस्पर सगठन
उन्हे इस उत्पीडन से मुक्त कर सकता है ।

सकस का सगीत
अपराजित आत्मिक अग्नि का मद्र निनाद है ।

सुन्दर शात और सौम्य

चाकू नही
फूल से मारो
एक कोमल ततु जाल के लिए
फूल ही काफी है।

वह मर जायगा
बिल्कुल सफेद निरक्त
और तुम्हारी शिनाख्त भी नही होगी।

किसने मारा ? किसने मारा ?
कही कोई गहरा घाव नहीं
खून का छींटा तक नही
उसकी सुन हुई चेतना पर
यह कैसा आघात ?
शायद यह अकाल मृत्यु है।

सुन्दर शात और सौम्य
एक अध्यापक की मौत
जिसके लिए अकारण ही
इतने चाकू धार जा रहे हैं।

विद्रूप

आ रही है आवाज़
आ रहे हैं वे
मय नेमुर सुर आर साज
क्या मूड हो गये हो बाबा
टूटे मूढ़े पर बैठे
क्या नहीं सरस्वती को रटाने पवित्रता
झूठ नहीं बोलें श्रीमान
यहां न रेल आती न विमान
यहां बहुत मलीनता है
अब वे आ रहे हैं
तो सब कुछ सजीवता है
आ रहे हैं
आज पढ़ा असम जा रहे हैं
व राजनीति का नया छंद गढ़ रहे हैं बाबा
और जिन्हें सुना रहे हैं
व बन्द' कर रहे हैं
ध्यान से देखें
वही चाल है
खोपड़ी पर कुछ छूट गये बाल हैं
स्पर्श कर चरन
जन के तारन तरन
घायलों के पट्टी बाध रहे हैं
नदियों का बाध रहे हैं
फाड़ रहे हैं ज़िले प्रांत
सब उनके विरोधी भ्रमित भ्रांत
सिर्फ वे ही हैं प्रजातान्त्रिक सम्भ्रान्त
वे आ रहे हैं वे आ रहे हैं
फिलहाल कहीं और जा रहे हैं

दूर चली गयी वो

दूर चली गयी वो धारा
एक खिंचे हुए धनुष की तरह
शक्ति को मुक्त करने की प्रतीक्षा करती

दोनों तरफ बटे हैं खेत
दोनों तरफ आदमी
किसी चापडी म वो एक बीमार
डाक्टर के यहा तक पहुचने की सोच भी नही सकता

दूर तक चली वह बात
कि अगर फिर से जीप आयी
तो कितने जुटाकर देने होग
कोई बूढा कहता है
आग से झुलसी पूरी फसल की बनिस्पत
कही ज्यादा महत्वपूर्ण है
एक पवित्र पुस्तक
कई लडके इस बीच
शहर जाकर सब कुछ तय कर लेना चाहते हैं

दूर बहुत दूर है शहर
कोई चौंकाने वाली खबर
उसके लिए नही रही है शेप
कल ही वह पूरा बरट था

एक हत्या हुई है शहर के
छात्रावास म
कहते है वे दौबर दर्रे से आय थ
लेकिन
गाव वाले जानत हैं
वे उसी शहर के थे

मलयज

खाली होते जाने म
आवाज भर
तुम्हारा खालीपन

कविता की चक्कर खाती
रगीन लालटेन म
तुम्हारा खालीपन
इस मैं बहुत बरसा स पहचानता हू

मैंने इस राग का वातावरण बनाते सुना है
आलोचको म तू तू मैं मैं होने के बाद
यह खालीपन ही
लौटकर दरवाजा खटखटाता ह

प्राचीन ऊचे परकोटे के बीच
उगा हुआ खिरनी का पेड

सुना है सिफ पेड होकर
दूसरो के फलो की हसरत रखने स
उदास होना पडता है

तुम्हारा यह खालीपन
इस जडता के बीच
तुम्हें ही ढोना पडता है

औरत और खाट

बान सुलझाते वक्त
पिछले वर्षों का उलझा हुआ ढेर
सुलझाते वक्त
किसे है मुस्कराने का अवकाश ?

ठहरे हुए हैं भूत और भविष्य
केवल वर्तमान भाग रहा है अधगति से
टटोलता कहाँ पड गयी है गाँठ
कहाँ गुत्थियों के मुखविहीन सिर
हाथ में आते आते छूट जाते हैं ?

उसके टूटे पके बालों में बजता है
मौत का धीमा धीमा सितार
राग
जो कुछ पल जागा था मधुर डूबा
जिन्दगी के नशे में
अब वही बिल्कुल नंगा उघडा बेताल
बुन रही है वह
दूसरे की खाट !!

उसकी स्मृति में न जाने कितने पिण्ड रूक्ष
अँगुलियों को छीलते हैं
फिर भी वह अपना बान था
अपनी गिरस्ती के भीने रसे चेहरों की चमक में
और यह जो बचा है
दिन के अन्त को बरदाश्त करने की एक कोशिश भर है।

कहीं जल्दी में छिपकर
अपनी उखड़ती हुई साँस में गायब हो जाने की ललक है—
एक मरती हुई औरत है
जिसकी हल्की आहट
खाट पर सोये आदमी की नींद में आती रहेगी ?

जलना

जला रहे हैं
सूरज के अंश को लूटकर
हम जला रहे हैं
और कहते हैं यह सूर्य चिकित्सा है

अक्सर राख गिरती है कपड़ों पर
किताबों में क्या लिखा है खाक !!
वे बिल्कुल साफ बचते हुए
जला रहे है
बहुत लम्बी लकड़ी या लोहे की छड़ जैसी
कोई चीज़
और लो कवि का कोमल हृदय
एक तरफ भून कर पलट दिया

कहते हैं
आप हमारी तरक्की से जलते हैं
खुद क्यों नहीं इस लूट में मज़ा लेते !!
सम्मेलन बुलाते लुटेरों का
और भाषण करवाते किसी दल बदलू
गिरोह के मुखिया का
दूसरों की राख से
त्रिपुंड बनाकर बनवाते मन्दिर
और चिपकवाते पोस्टर घर घर

ईश्वर डाकुओं के हित में आत्मसमर्पण कर रहा है।

कविता की सुबह, भोपाल

एक कमरे मे गुरु गम्भीर नाटक चल रहा है
सब श्रोता मौन मोहाविष्ट सुन रहे ह
खबरें एक मोहक अबूझ ससार की
रोशनी झिलमिल वक्ता के थिरकते शब्दों स
तरगो की पाल खोलती
रगीन जालीदार ओढनिया खुशबुओं स लबालब ।

सब डूब रहे हैं लेकिन बाहर निकलने के लिए
कोई भी नही छटपटा रहा
कमरे म कविता पढी जा रही है
और बाहर लडाई चल रही है
टूटी रबर की चप्पलो की गठाई
और दभी जनमजात कायर दलाल की ढिठाई
सब तरफ लगता है मौत अब आयी तब आयी

लेकिन भीतर पलकों की सजावट म
नयी नयी कल्पनाए हवा म हाबुओं की तरह उड रही है

सुनो उसे कुछ उढा देना
कविता पढकर जब वह बाहर जायगा
तो उसे लू लग सकती है

वशीधर मिश्र

आदमी जो खो गया
जिसका आदश किसी प्रेतात्मा की तरह
कुछ देर रास्ता रोके खडा रहा
वह भी बह गया नयी बाढ म

अब जबकि कुछ व्यापुन्न कीडो के लिए
धूप की मुस्कान है
और दिन अकारण सपने देखत हो गया
वह आदमी जो खो गया
बहुत पहले ही मर रहा था
वस लगता था वह भाग रहा था
अपनी कुर्सी पर बैठा जाग रहा था
जिसे योगमुद्रा मे अच्छी हिन्दी बोलते हुए
वे जाग्रत होना कहत है

आदमी जो खो गया
एक सपन की पीठ पर चढकर
सवहारा के मानवीय शासन को गुहार दता
बढ गया
आदमी जो खो गया।

दरवाजा नही था

दरवाजा नही था
धूप किधर से घुमती
प्रवश के लिए या तो होना था सिर
या चोर क पाव
दौडते दौडते घायल हो चुके हो जो

दरवाजा नही था
किसे करत वद
धूप या हवा या आवाज
या गध
किसे पहचान कर अपन खेम का आदमी
आलोचना को ल जाते प्रशसा के घर तक

वह औरत एक बूढी नौकरानी जसी
जीवनपयन्त जिसन दखी ह
पारिवारिक लड़ाइया
और गायी हैं प्रसन्न गालिया
अगर होती वह धूप
या किसी बौछार की शक्ल म
तो भी हम उनके लिए टूटी तिपाई लाकर रख दत

लकिन दरवाजा ही नही था
जिसके न होने से
कस निकलत व सार शिशुबोध
बाहर
जहा अधेरे म अनगिनत दरवाज एक दूसर को
जबरदस्ती बन्द कर रह थ

बाहर आना खतरनाक हो सकता था
बाहर सब मौजूद थे—स्वतंत्र झूठ
कानून की सार्वभौम सत्ताएं
और चापलूस गीदड़ों की शोक सभाएं

लेकिन किसी ने भी प्रश्न नहीं किया—
दरवाजा ही नहीं था
तो हत्या भीतर हुई
यह कैसे सिद्ध हुआ ?

हत्या एक खबर

खचाखच भरा बाजार
जैसा हमारी धरती पर अक्सर होता है
हजारों आंखें आश्चर्य और दहशत में खुली हुई
किसी एक के मारे जाने का तमाशा देखती

कोई भी नहीं बोलता उस वक्त
कहीं से भी नहीं आती पुलिस
कोई भी नगरपालिका
बीमारी हत्या और बलात्कार के खिलाफ
नहीं लगाती बैरियर

इसीलिए बेशर्म सूरज की चढ़ी हुई बाहों से
निकलता है एक चाकू
चलता है देशी पिस्तौल
और चौराहे पर गिरता है एक आदमी

वैसे कह सकते हैं गलती शिकार की भी होती है
लेकिन
बाजार में इतने सारे तमाशबीनों की निरपेक्षता
एक मरी हुई कौम की खबर बनकर कौंधती है।

यह आदमी

जा आदमी बचन है
सुबह सुबह मिला को
वह भेदिया तो नहीं है
रात का
वो ठहर गया है हिलाता हुआ अपना हाथ
बनकर बहुत निरीह निराश्रित एवं बूढा
उसकी आखा म झाकने से लगता है
कहीं भी भीतर घात नहीं है
लेकिन उसकी पीठ पर
किसने सटा रखी है पिस्तौल
उसके काना म बाध रखे है
अदृश्य हैडफोन
क्या वह तुम्हारे समय की प्रशंसा करता हुआ
बाइ तरफ कनखियो स देख लेता है ?

खिड़की के सहारे
जब रात हुई थी
नीचे गली मे धीरे स
किसने उस पुकारा था
क्या कहा था उसस
कौन सा पाटू दिया था उसकी जेब मे ?

वो तो तब ही चला गया था
लेकिन यह
अपनी दाढी के उलझे भोनपन म
सुबह हाते ही आया है
क्या मरने म पहले तुम कुछ कहना चाहते हो ?

जब चीख डूब गयी

जब चीख डूब गयी
ठहर गया पानी भराव म
डूब गय सपन
डब गय असहाय थके अपने

जब नीद उठ गयी
आगे दीखा रास्ता बिल्कुल बद
काटा के बीच फसी असख्य उलझनें
खुद गयी लकीरें
सुदर उदास चेहरे पर
काली शबीह मे
हल्की सफेद काटदार आख

जब चारा तरफ सब कुछ हो गया शात
पक्ष के मुह मे लुगदी बना विपक्ष
जब उल्टी हो गयी
और फेफड तक निकल आय बाहर
जब मन अपन आग धसकत देखे पहाड
गिरती देखी अडिग चटटानें
पिसते देख स्पाती हाड
जब भील मा रोयी दहाड-दहाड
और नग बच्चे न मिटटी की एक रोटी बनायी

मैंन देखा मुझे कम दिखाई दन लगा है
मैंन खूब चाहा तनाव स मुक्त होकर गाना
लेकिन मरी नसा म खिचे हुए तारा म एक आवाज टकराती रही

जब सब कुछ काला और शात होकर सो गया
कही स एक नीली परत हटी
एक चेहरा बिल्कुल मुझ जैसा उठा और झुक गया

एक कटे पेड की कहानी

सूखना एक त्रिया है
लेकिन कट करके एक तरफ गिर जाना
निष्क्रिया है

किसी पड ने कितना देखा है
सहा है
पेड का अध्ययन क्यो करत हा
मा को दखो

पिता दाद के घावा को
सुबह उठत ही सहलान लगते है
यह सब स्कूल जात बच्चे के भारी बस्ते मे
ठुसी किताबा म नही लिखा होता

किताबें बनाना भी
लडकी के लिए दहेज की चीजे जुटान जसा
एक काम है
जो लिखता है
वह जीवित होता है लेकिन सूखना हुआ
जो छप गया है
वह कटकर अलग हुआ है
अपनी निर्जीव जिल्द मे सडता

लेकिन सडन से ही दुबारा जैविक ससार म
आ जाता है वह
या दूसर रूप म कही मौजूद होता
फिल्म देखता
अपनी पत्ना के लिए रिबन खरीदता

जिन काले घन वाला पर रीझी थी वह
अब इन झूलती हडिड्या के चटख चटख कर
चलन स
क्या उदास हो गयी है ?

उसे अपनी लटरिया की गहरी हरी पत्तिया म
सुख गुनमुहरा का खिलना दखना चाहिए
गुसलघर म नहात समय
वह पानी की आवाज शायद न भी हा
क्याकि सु दर गुदाज नग्न शरीर की
कई अनुगूज होती है
जा तरती है सारे घर मे

रग के ठडे स्पश की तरह
बुढापे को स्वीकार करना चाहिए
बार बार बुखार और खासी के
आत्मीय चुम्बना उल्हानो स
लगता है
तुम सूख रहे हो लकिन अभी तक जडे साबुत है

मिटटी न तुम्हे छोडा नहा है
बल्कि तुमने मिटटी को धारण किया है
अपनी लकीरो वाली झुलसी हुई धरती पर

आओ
अब इस पेड का दुबारा दखे
रुकी हुइ गाडी की खिडकी म
पहली पहली प्रमिका की तरह
यह तुम्हे दख जा रहा है

बकरी और बच्चा

बच्चे के लिए बकरी के आस पास होने का
सुख है
हरे मे सफेद काले रगो की चलती हुई परी वह
बच्चे को देगी जो भी उसे चाहिए

लेकिन सियार सघन खोहो म
बठे देख रहे है
ये दोनो धीरे धीरे बडा हो रहे है
उन्हे कभी नीद नही आती
वे कभी सपना नही देखत
उनके लिए बकरी और बच्चे म कोई फक नही है

दोनो का विकास जगल की सम्पत्ति है
अगर शिकार शिकार ही रहे
तो किसे आपत्ति है ?

तुम कुछ पाना चाहते हो
तो रिरियाओ मिमियाओ
लेकिन किसी बडे अन्तर्राष्ट्रीय मल मे
दोना की ही बलि है
बकरी वहा दया का प्रतीक है
और बच्चा कतव्यनिष्ठा का
दोना का देश प्रेम प्रशसनीय है

रात भर उनकी झोपडी के बाहर
घूमते हैं बघेरे
दिन भर क्या-क्या देखा है
बाहर निकलकर कहने का ससर है

बकरी इस बच्चे मे मर रही है
और वह भी बकरी मे क्षीण होता जा रहा है
एक दिन दोनो की गदनें ऐंठते हुए
सियारा का राजा कहगा—
तुमने उठाए है अभिव्यक्ति के खतरे कई
हमार राज मे देर है अधेर नही

एक दिन

महज एक क्रन्दन है
तुमने समझा वह बड़ा हो रहा है
अब कुछ कुछ दवा माफिक आ रही है
रात में कम खाँसने लगा है

महज एक छलांग है
दियासलाई की पटी के लिए अँधेरे में

शहर का वो दिन इस अँधेरे से
कितना उजियाला था
अचानक चहकने लगा था सब कुछ
वे आये थे
किसी नहर का पानी ज़मीदारों की देन
उस दिन हमारी ज़िंदगी में
दिन भर नल आया था
बहुत अच्छा लगा कि एक बार भी बिजली
नहीं हुई फेल
और सड़कों पर कोई हत्या
इतनी सुनियोजित होते हुए भी स्थगित रही
चप्पे चप्पे पर पुलिस थी
यातायात कि इंजनों की आवाज़ तक में
दब्बूपन था

महज एक अभिनन्दन था
जिसने एक दिन दफ्तरों में अनुशासन का दे दिया
तुमने समझा सब कुछ बदला जा रहा है
विदेशी कोट की तरह
दुबारा किसी प्रेमी दर्जी से

सब कुछ फिट किया जा रहा है

महज एक अश्वमघ था जो गुजर रहा था
एक अतरिक्ष यान किसी जादूगर का
जिसने हमारे इस न्हे उपग्रह के
सभी वज्ञानिक
अपने नियत्रण कक्ष मे कर लिय थ कद।

सुबह और घाट पर उनका स्नान

खुरदरे पत्थरा की सीढ़िया म
पानी चढ़कर उतर गया
काइ की लाल भूरी आख म म झाकता
पानी टूट गया ।

नविन व दो भव्य व्यापारी वधु
सिफरात अपन पेट
मत्यु के भय म अब भी कॉप रह हैं
बहुमूल्य शख और सीपिया
उनके लिए चारो तरफ भय ही भय है ।

वे दोना भाई अपनी छाया की हिलती
तरगित रखा म भयभीत
और मलेरिया के गाव म हुमच कर उठती
सरमा स भयभीत
गीली लकड़िया के धुए स भयभीत
सूखी टागा के लचक-लचककर
आगे बढ़न से भयभीत !!

कही ऐसा न हो
कि उनके ये दो कोमल
सूखे धाग जस प्राण पखेरू
इन सीढ़िया पर ही ढेर हो जाए

शहद

1

शहद लाता था
मेरे साथ चढ़ता था पेड़ पर
दोनों को लगती थी प्यास
ये वो ही तो पेड़ हैं जिनसे दाने बनते हैं
एक सकरी गली में है एक सकरा द्वार
प्रेम में जो कोई मरता है
मूग कर दाने पत्तों में बदल जाता है

तब जीमण होता है महा समाज का
पूछती है लड़की
देख यार यह तो धर्मेन्द्र सा लगता है ?
रहने दे अभी मुझे भूख नहीं है
अखबार पढ़ते रहते हैं हम
खाने का इन्तजार नहीं
कुछ कम हो जाये वायु विकार
हां, अखबार जैसा ही कुछ खड़खड़ाता
एक शाल पहिन वह आयी और बैठ गयी—
आजकल असली शहद कहीं नहीं मिलता
दस नम्बर की सलाई होगी क्या

2

न जाने कौन सी चिड़िया
अपनी छोटी कश्ती तैराती
नाच रही है खजूरों में
छायाओं में भिचने लगा है सूरज
क्या कहते हैं मुख्य सचिव

क्या फूटने लगा है बिल्कुल नया बाघ
बच्चे इस देश की धरोहर हैं

यानी जब वे कहीं नहीं जा पाते गर्मियों में
झुलसते रहते हैं सारे दिन
और सर्दियों में फुटपाथ पर
विदेशी पुराने स्वेटर पहना खुशनुमा लगते हैं
वे बहुत भारी वजन लेकर चलते हैं सीना
अपने गंगा जमुनी स्कूलों की तरफ
सच वे धरोहर ही तो होते हैं

3

क्या तुम्हारे पास थोड़ा सा असली शहद होगा
खांसी स्वप्न का नाम ही नहीं ले रही
आसमान में एक साथ
कई हेलीकाप्टर उड़ रहे हैं
तोतों के झुंड
पकते अमरूदों के लिए शोर करते
आ रहे हैं जा रहे हैं

इन्द्रधनुष को काटकर
बढ़ रहा है एक सैनिक जहाज़
तुम्हें पहले से ही पता था
वह एक न एक दिन इस झगड़े में मारा जायगा

यह दूसरे देश के आन्तरिक मामलों में
खुला हस्तक्षेप है

हम विभाजन नहीं सहभाजन चाहते हैं

ड्रेगन फ्लाई

एक जगह अधर झूल म
पख कपकपाते हुए
उडान भरी भी नही
लेकिन लम्बी उडान जितना समय
लगाते हुए
चटख सुख रग मे
मादा का मुक्त गोला बनाकर
यह कौन उडा है ?
प्रसन्नता मे कुछ हवा म
कुछ नशे मे
थिरकती है काम
और यह कौन उडाये लिये जा रहा है
अपनी फुलझडी बाइ को
यह कौन समय के ठहरे हुए झूले पर
प्रेम का डिस्को करता
यह कौन ताल देता प्रतीक्षा के सारे पावो म

अच्छा है आदमी ने अभी ध्यान से देखा नही है
अच्छा है आदमी ने उडते हुए
अभी तक अतरिक्ष मे गृहस्थी नही बसायी है
अच्छा है वह अभी दूसरे जीवो से इतनी छेडछाड नही करता
अच्छा है वह नापाम गिराकर इनके साथ साथ नष्ट हो जाता है

अयात्रा

कैसा होता है समुद्र ?
मैंने समुद्र नही देखा।
कैसा होता है हिमपात ?
मैंने हिमपात नही देखा।

आच्छादित घाटियों की खिड़कियों से
ये कौन से चेहरे झांक रहे हैं ?
क्या मैं वामन देव की तरह
पृथ्वी को पैदल ही नापने का कौशल
जानता हूं ?

हम गर्मियों में कही नही जाते।
हम शरद में कही नही जाते।
हम वसंत में कही नही जाते।
हम फूलों की घाटी में नही घूमते।
हम मुगलिया मकबरों व बगीचों में नही जाते।

हमने इस छोटी सी पृथ्वी को
हमारे मुंह में बंद कर लिया है।
उसका हरा नीला पिंड समाया है
हमारे मुंह में
खुलता है मुह और हम एक-दूसरे के मुंह में
देख लेते हैं घूमती हुई पृथ्वी।

हम अविचलित हैं।
हम स्थिर हैं हम स्थायी हैं।
हम नश्वर हैं तुच्छ हैं काई हैं।
काई कही नही जाती।
थोड़ा-सा ऊपर-ऊपर तरती है।

आकाश निहारती है।
फिर सूख जाती है।

तैरते हैं विशाल खेतो पर
परिवहन के वातानुकूलित यान।
ये सभी घुमक्कड सम्पन्न लोग हैं
कितने ज्ञानवान कितने महान !!
लेकिन हमारे मह की विराटता के आगे
व कुछ भी तो नहीं है।

जो वचित है वे सब कुछ देख रहे है।
जो वचित हैं व मेरे साथ सारी पथ्वी का
मुह के टी० वी० म देख रहे है।

बाहर से पथ्वी को देखने की बजाय
हम उसे भीतर म देख रहे हैं

•

सरोकार

सूखते हुए भर जाना
वह जानता था विसना
और भिचते हुए फल जाना

वह नीच उतरत हुए
उचरना था लगातार ऊपर
और ऊपर म धक्का खाकर गिरत हुए
हसता था—यह महज सयोग है
काव काव है डूब हुए लमटगा की—

ठहरत हुए भी चलन का ढोंग करना
जस साधु आय दिन गाव म फैलाता है खबर

लोग दूर दूर म आकर उन्ह दरी पर बठे थ
आशा थी बहुत श्राता हागे लकिन उतन नही थ
वहा
उस जलम म काटदार चुस्त सूट पहन
एक सुन्दर लडकी न बहुत स सवाल पूछे
नाव म लगता था नदी बठी तर रही है
आर नदी मे नाव थी कि जस दोना ही
भागत हुए सूरज का पीछा कर रही थी

धुआ उठ रहा था वहसा म
जबकि बहुत सी चिमनिया खामोश थी

सब व्यथ हा जाता है घर लौटन पर
खटखटाना पडता है दरवाजा
या फिर वही सवाल खिडकिया स झाकन लगते है
जो उस सुन्दर लडकी न पूछे थ

सूरज श्मशान ओर हड्डिया

गदन दुखती है
तून झूठ कहा पाव
यह भी झूठ कल इतनी नही दुखती थी

काली दुबली दहिया आर सूरज डूबन का था
सूरज चला था तालाब
चिडियाए वही रुक गयी
सूखी लकडियो का गटठर एक

जैस उसकी मा की सूखी हडिडया
धीरे धीर श्मशान की तरफ सरकती थी ।

निल ज सूरज आर उसके नीचे हसता शहर
एक भडुए का आत्मनाश करन का डामा
वह एक खायला शरीर
ऊचे निखडे पर घायणा करता सब ठीक है
चौक्स कुत्त
चौकस दिन म छिपे बठे
सियार ताजा खोदी गुफा मे
अटपटा काटो से भरा जगल
आर बीच म प्रसन्नवदन वह झरना
प्रदशन किसी राजसी भोज का
सब ठीक है सब ठीक है

दूर पहाड दर पहाड
वे सूखी हडिडया चली गयी थी
इतनी जिजीविषा थी
उलकी नही
बचकर आ गयी नरभक्षी बाघ स

और बाघल नर से

किसी जगल के सरक्षण का प्रमाण उन्हे जुटाना था
लौटकर जलाना था चूल्हा

वसे तो सूरज भी इसी मौजन्यमिश्रित उपक्रम मे
कर रहा था जल्दी लौटने की
पतनशील ! ढागी !
दुवारा चुनाव मे जीतने के लिए
बिखेरता था धूप की सदाशयता
इन हड्डिया पर
इन सूखी लकडिया पर

जो एक साथ श्मशान की तरफ सरक रही थी

जगल के दावेदार

1

उन्ह घर नही चाहिए
घर स अधेरा होता है
दो अकेले व्यक्तियो का

व घर की बजाय पेड चाहते है
जिस पर तरह तरह की चिडियाए बठगी
और उड जायगी

2

उन्हे बिजली भी नही चाहिए
क्योकि राजपूत काल के परकोटे म
एक दरवाज़ा अभी तक साबुत है
जब चाहे तब बन्द हो सकता है अधेरा बाहर
और सिद्ध कर सकते है
कि व शहर म है
सीमा पार जगल ही जगल है

3

उन्हे राशन काड नही बदलवाना है
व जो सस्ता होता है वही तो खरीदते है
मसलन गुड रेजा और एलमुनियम के बतन

एक राशन काड मेले म खोये हुए
किसी बच्चे का आत्तनाद होता है
वह उसका फोटो है जो कही गायब हो चुका है

उन्हे चाहिए जगल म साथ साथ चलता बच्चा
जो लौटने तक यह नही कहे कि भूख लगी है

4

वे मुह अधेरे चल देते है
न चाय न कोई ऊनी जरसी
जब उसी वक्त बस की छत पर से फेंका जाता है
अखबार का बडल
वे नही पढते अखबार ओढे हुए शाल
और धीरे धीरे गुटकते हुए चाय

व तब सघन नाला मे
तेज आखा म सूखी लकडिया खोज रहे होते है
उन्हे बिल्कुल नही चाहिए
महारानी के शानदार भोज की खबर
जगल म जो घट रहा है आय दिन
उन्हे चाहिए सिफ कुछ सखे पेड
सूखे पेड से ही तो आखिर बनता है अखबार
शायद वे इस इस तरह नही समझते

5

उनम स एक आदमी उठा
और बोतल लेकर आ गया
एक औरत उठी और कुछ सूखी लकडिया सुलगा कर
इन लोगो म शामिल हो गयी
उन्हे नही चाहिए किसी तरह का भय
कि इसम कुछ हुआ तो

आग फल कर छप्पर छू लेगी
व जानते है आग का उत्साह
तप भीतर स सिके शरीरो म एक दो घटे का
काया पलट होगा
और यह अच्छा है कि वे सब
फिर उसी जगल म होग

6

दया अथवा ममता से बदलती नहीं है दुनिया।
दया अथवा आशीष से बदलते नहीं हैं दरिद्र लोग।
वे समझते हैं उसे जो भीख दे रहा है।
वे जानते हैं उसे जो हाथ मिला रहा है और कर्ज उठा रहा है।
वे सुन रहे हैं उनकी मुक्ति किधर से आ रही है।

शहर से लौटते वक्त वे आपस में बातें कर रहे हैं।

श्यामली

श्यामली
पाच बजे
जलते सूरज के छज्जे के नीचे
सुख तेल रग म लिपा चेहरा
चेहरे के चाखटे म
गहरी चमकदार काली परत
भिनसार जगल की अनाम खुशबू
नगे सालरा के बीच गुजरती हुई
एक द्रुतगामी आत्मा
जिसका जगल म ही पीहर
और जगल म ही सासरा
आस-पास दह ताल
धौक कदम्ब कटली गुग्जन महुआ
लेमुआ पलाश
आस पास आदिमूल मानव का साम्राज्य
जिम शहरा क उन्मत्त प्रशासका ने
घेर कर खत्म करन की याजना बनायी है
माला मचान और खडा हाका
शिकार की सभी प्रचलित पद्धतियो के बाद
अब सीधे सामन दखते ही
गोली मारन का आदेश है

बात श्यामली की हो रही है
गुड की हाडी ताक पर से उतारते वक्त
उसमे कितनी उमग है
ठप्प की जरा सी धुन पर
वह गुलमुहर जसी हो गयी है
किसी टटक वाजे की जरूरत नही

अब शादी के बाद
गट्ठर उठान के लिए
उसे किसी पराये आदमी की मनुहार नहीं करनी पड़ेगी

करना होगा

करना होगा सामना
मुखौटे का
हँसती विस्फारित नुकीली आँखें
बजबजाते हैं हाथ
रेशमी गुदगुदा जलतरंग बजता है
शरीर में
करना होगा सामना उसका
वो हंस रहा है क्षमा कर
मेरे व्याकुल प्राण
मेरी शंकाएं मेरी सिमटी हुई आकांक्षाएं
और अभी या कभी ऊंचे गगनचुम्बी दुश्यन्दशा से
सरसराती हवाएं आयें
लुटा जायें प्राण
करना होगा करना होगा
परिचय आतंक का
उस सुन्दर से लगते ज्वालामुखी का
जिसके खुले मुंह में है
प्रयोगशाला मेरी भाषा की
वह दहक उठेगा
भर भर बिखेरेगा लावा
और रुपहली रेत
भर भर देगा प्राणवायुविहीन श्वास
करना होगा फिर भी परिचय
उस सतत वेग का

आ रही है तत्वों के विखंडित होने की
गंध
आ रही है रूएं जैसी आदिम घोषणाओं की

तरग
फिर यही जाकर घटगा ताप
वह अट्टहास सुनाकर
आग
फन जायेगा स्मित समझदारी म
फिर उठेंग धौंक महुए साल
फिर बदनत वक्त एक लिखा पन्ना
दीखगा एक आमत्रण
उस सुख रू का
मिट्टी के तने तेज टाच फकता

विखण्डित

हम उसे काम करते हुए देखना चाहते हैं।
कैसी गिर जाती होगी उसकी गर्दन
सिकुड़ जाता होगा चेहरा
उसके सिर में फूटते होंगे बम
उसकी बाहों में चटखती होंगी नसें

क्या उसे किसी ने बहुत पीटा है ?
पीटा है नुकीली छड़ियों के साथ ?
उसकी सूखी जांघों में चुभाई हैं गरम सुइयां ?

उसे किसी ने बेघर तो किया ही नहीं
अभी तक एक दिन के लिए भी निकाला नहीं नौकरी से
फिर भी हम उसकी शिकायतें सुनकर फैसला करना चाहते हैं।

वह आखिरी आदमी है
जिसे सुविधाओं के बीच न्यूनतम प्रताड़नाएं झेलनी पड़ी हैं
वह इस कतार में आखिरी शोषित है
जिसे बिना किसी अरुचिकर श्रम के बस खड़ा रहना पड़ा है

क्या होते हैं इस जमीन पर उसकी तरह के असंतुष्ट क्षुब्ध आदमी ?
क्या शब्दों की चिमटियों से खींच खींच कर उखाड़ता है
वह अपनी पलकें ?

हम उसे इस मानसिक द्वन्द्व के बीच छटपटाता हुआ देखना चाहते हैं।

उसका चेहरा क्या किसी झुलते छज्जे जैसा तिरछा लटका है ?
वे कौन सी चिंताएं हैं जिनसे सामना करते हुए
वह चमगादड़ की तरह कमरे में भटक रहा है ?

मैंने खोल दिये हैं सब दरवाज़े
बाहर रोशनी कर दी है भीतर अंधेरा
ताकि उसे किसी व्यापक सरोकार का रास्ता दिखाई दे जाय

मैंने उसके लिए अपने मुंह से कितनी ही संकेतभरी सीटियां बजायीं
लेकिन वह इतना अधिक व्यस्त है अपनी संवेदनाओं में
इतना घबराया हुआ है कहीं बंद होकर गूंगा हो जाने से
वह मुझे पहचानता हुआ भी दूर-दूर उड़ रहा है

उड़ता हुआ भी गिर रहा है ऊपर किसी अन्तर में

काल मृगया

उसकी चौडी सपाट हथेली पर
सतुलित होते हुए
डर लगता है उसके मुट्ठी वद करने का

वह अपनी विकराल शाखा के आगे
नचाता है
मेरे तट तराशे हुए कधे
न जाने किस अदृश्य सत्ता की आरती
उतार रहा है वह
जबकि मेरा इतना सा अपराध जरूर हुआ
कि मैंने उस सर्वशक्तिमान नही माना

कुछ समय के लिए
जब घाटी म सूखे दलदल की उदासी भरी थी
सिफ एक पट भरने के फैले खालीपन म
वह सत्ता केन्द्र के बीच हो गया
विराट बाहुबली
अपनी एकमात्र निरकुश तानाशाह बनने की
लोलुपता म
जन कोलाहल के बीच अड कर खडा हो गया

मैंने अपनी अवश घणा का फूतकार करके
कोशिश की उस धमकान की
अपने शब्दवाणो की खुट्टल नोको से
चाहा उसे बीधना
लेकिन इस खास उलझे हुए समय म
उसके शरीर की एक भी नस नही आयी मेरी पकड म

सवन कहा मारो इस
एकान्त उपेक्षा म छाटकर
जगा यह खड़ा है उस ऊजर धरती का
तनिक भी मत छुआ
मजदूर कारीगर की चमत्कारिक अगुलिया के स्पश से
वचित कर दो यह घिनाना भगोल

मारो इस बनाकर एक घेरा गाल
और इसके सिर तक फना दो आग
लकिन
बहुत स लोग पहने ही छू चुके थ उसक पाव
उनके सिर उसकी दैत्य प्रतिमा की छाया म
झुक गये श्रद्धा स
उनके मन का सदह बुझ चुका था
वे बहुत दूर दूर के इलाकों स पदयात्रा करत आये थ

मेरे कधा की फाकें करत हुए
वह ठठाकर गरजा कहा है तुम्हारा वह बच्चा दिमाग
जिसमे तुमन मेरे न हे दुबल और क्षणभगुर रूप की
कल्पना की थी ?

वह झटक दता रहा
मेरी विफल योजनाओं को
मरे बहुत म प्रिय विचारा का चूरण
भूसी सा उडता रहा
उसके अध श्रद्धालुआ पर

पिरामिड-83

1

बहुत बडी-बडी मम्मिया
एक बहुत बडे मकान के बाहर खडी हुइ
हस रही हैं
हम देख नही रही
बल्कि दिखा रही हैं
नीले हीरक पन्ना के मुकटा मे
साम्रा य का भव्य गुलाबी सूर्योदय
वह तप्त सदाशय मुस्कान कि
हमने शासन किया है
और अनक कठिनाइया के रहते सोचा है
विकास
बार बार चाहा ह
निधन विप्पण उठे हमारी करुणा स
हम कह सक प्रजा से कि
दो सवश्रेष्ठ साम्रानिया ने कितना देखा है
सहा ह

2

आ रह है खाती
नवीनतम औजारा की स दूकचिया लेकर
ठीक करेंगे पाए सिहासन के
लेकिन गडढे मे धसक सकती है रानी
अभी भी बिना किसी दुघटना के
देखता है परिवार यह तन यह मन
अभी तक भी साबुत सुवल
वह खडी भी रह सकती है

और तज चलार पहुन सकती है मच पर
फिर वह पत्रकार एक दिन
कुछ पूछने पूछन
अपनी प नी के अदृश्य भय म
मिकुड गया अपने ही सवाल जैसा

३

नयालीम करोड ध
जो अम्मी करोड के माथ गढ गय
जिन पर गाओ के उफनत समुद्र की शराब म
ढन गय
आदमी को जमे बदलत हुए
खाद्यान्न मे
कोई महान अयशास्त्री घोषणा करता है
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के लिए
इमम बहतर हो सकता था
जडे कही है जरूर
लेकिन मिली नही है
भयानक सीधे उतार हो तो उतना ही बेहतर
चुप का अपव्यय स मारन का
इमम अच्छा क्या होता उत्तर

4

कोई भी बोला नही
लेकिन कनखिया मिलत ही
एक सूत्रधार मुस्कान म सिन थ उनके आठ
वे दिल्ली गये थे
मिल तो थे पर चुप रहे
समझ गय फिर
जसे समझा दिय गय थ
प्रान और राजधाना क क्षितिज पर
एक नया सफेद चन्द्रमा उगा

वे समझे ता नही
न सुन्दर कुछ देखना अब शेष था
लेकिन उन्हे बतलाया गया कि यह कल तक
जो सूरज का अश था
कल फिर पूरा सूरज होगा
वे अवाक देखते रहे
तत्र के बीच मे एक मत्र लिख गया था

5

एक तरफ था
सतत अनवरोध जीना
और दूसरी तरफ शिशु बली
इसी क्षुद्र चक्कर मे
तुम्हे उसका पुतला जलाकर सताप करना पड़ा
तुम मुण्डा सग्राम को भूल गये
बिसर गये कुमौदनी मौसी को
जिन्होने आजीवन कुए से खीच कर
पानी भरा
इश्वर तब श्रृगार भोग और शयन के
शारीरिक उपक्रम मे मस्त था

एक तरफ था सतत अनवरोध जीना
और दूसरी तरफ
किसी पिरामिड मे
तूतखामन सारी सम्पदा के साथ सोया था

एक बुढिया

अल्ला उसे मौत दे
बीच रास्ते मे अचानक
एक सुखद मौत

अखबार की खबर की तरह
कोई राष्टीय तनाव नही
न किसी नफीस जडावट की पत्रिका का
सास्कृतिक उलझाव

अल्ला उसे एक सीधी सादी खामोश निजात बख्शे ।

एक बुढिया ने हाफ्ते घिसटते ऊबड खाबड रास्ते पर
यह थोडा सा सभव मागा है
फिर देर क्या ?

केरोसीन की गाडी
अगर इस मुर्दा बस्ती मे नही उतरी है
और हर कोइ डाक्टर मुस्कराता हुआ
हड्डिया को भी निचोड लेना चाहता है
तो इतनी देर क्या ?

तीसरा पक्ष

दो कुशल योद्धा लड़ते हैं
और तीसरा मरता है
वह हरिजन होता है

या कोई बूढ़ा जर्जर लकड़हारा
जिसने आजीवन कांपती हुई टांगों पर
बोझा ढोते हुए
सुमुग्ध सुमध्यान नागरिक की दहशत में
जंगल काट कर एक संगीन जुर्म किया

आदमी मरता है
तो संवाददाता कुछ देर बौखला कर
शब्द खोजता है
एक मौजूं सिर इस खबर के लिए
जो प्रतिपक्ष की नसों में ग्लूकोज की तरह दौड़ जाए—
"यार, जोश तो आता है, लेकिन करें क्या ?

एक प्रतिपक्ष सवाल करता है
दूसरे प्रतिपक्ष से
और शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए
न जाने कितने प्रतिपक्ष
जो फिलहाल इसलिए बाहर इकट्ठे हैं कि
पक्ष ने उन्हें पुचकारा नहीं है

एक बुढिया

अल्ला उसे मौत दे
बीच रास्ते में अचानक
एक सुखद मौत

अखबार की खबर की तरह
कोई राष्ट्रीय तनाव नहीं
न किसी नफीस जडावट की पत्रिका का
सांस्कृतिक उलझाव

अल्ला उसे एक सीधी सादी खामोश निजात बख्शे

एक बुढिया ने हाफते घिसटते ऊबड खाबड रास्ते
यह थोडा सा सभव मागा है
फिर देर क्या ?

केरोसीन की गाडी
अगर इस मुर्दा बस्ती में नही उतरी है
और हर कोई डाक्टर मुस्कराता हुआ
हड्डियो को भी निचोड लेना चाहता है
तो इतनी देर क्या ?

एशियाड

उनका जलसा ख म हुआ
उनके सुखा का बखान
उनकी प्रम नता की चकाचौंध
उनक स्वस्थ चिक्न चेहरा का वज्ञानिक सौ दय

सब कुछ ख म हुआ
और मेर सामा य अकिंचन कष्टों को
फि र स खुली ताजी हवा मिली

वे चुस्ती के साथ लौट नही पाये
क्याकि स्खलित थे
कुछ अपन प्रतिद्व दिया मे दलित थे
आखिर भूखे घुमक्कड बिहार राजस्थान और मध्य प्रदेश के
आदिवासिया ने
भ य स्वग जस स्टडियम बनाकर
उ ह सौंप दिय
आखिर वे अधेर की पष्ठभूमि म असख्य टुकडिया
अपना काम मुस्तैदी से करक
उनके शहर क चमकील मलबे म दब गयी

लेकिन विनान और तक्नीक का जो सच है
उसक फ्रेम मे यही लोग ही तो जडे है
इसस क्या कि कौन अध्यक्ष है
और कौन सबस अधिक स्वणपदक विजेता ?

आइए अतिथि महादय,
दूसरो के हाथा बने दस्ताने पहिन कर

दर्शन

जादमी के बनाये हुए अधेरे मे
दिपदिपाते हे सवशक्तिमान
उनकी सावली बडी जाखो म
कुछ प्रेम कुछ उदारता कुछ गर्वीलापन है

भ य वह भी कम नही है
जो इ जीनियर है
इम विराट वस्तु शिल्प का

दलित की दष्टि म कातुक है
दोना पक्षा के लिए
यानी प्रभु की सत्ता आर
बुजुआ के उदात्त क लिए
एक अवाक जिनासा है कि

ऐसा कसे हुआ   एसा कम हुआ !!!

एशियाड

उनका जलसा खत्म हुआ
उनके सुखों का बखान
उनकी प्रसन्नता की चकाचौंध
उनके स्वस्थ चिकने चेहरों का वैज्ञानिक सौंदर्य

सब कुछ खत्म हुआ
और मेरा सामान्य अकिंचन कष्टों का
फिर से खुली ताजी हवा मिली

वे खुशी के साथ लौट नहीं पाये
क्योंकि स्खलित थे
कुछ अपने प्रतिद्वन्दियों से दलित थे
आखिर भूखे घुमक्कड बिहार राजस्थान और मध्य प्रदेश के
आदिवासियों ने
भव्य स्वर्ग जैसे स्टेडियम बनाकर
उन्हें सौंप दिये
आखिर वे अंधेरे की पष्ठभूमि में असंख्य टुकडियाँ
अपना काम मुस्तैदी से करके
उनके शहर के चमकीले मलबे में दब गयीं

लेकिन विज्ञान और तकनीक का जो सच है
उसके फ्रेम में यही लोग ही तो जड़े हैं
इससे क्या कि कौन अध्यक्ष है
और कौन सबसे अधिक स्वर्णपदक विजेता ?

आइए अतिथि महोदय,
दूसरों के हाथों बने दस्तान पहिन कर

अपने निर्जीव हाथो से
यह उदघाटन कीजिए

व लाग पडा की घुमावदार पगडडिया के पीछे
छिप हुए
तुम्हारी चालाकी देख रहे है

वे डरते हैं

यह कहा स उठी है नयी आवाज
यह उठी है पूरब के तोरणद्वार स
जिसन जलाया है आग बनकर
झूठा साम्राज्य

डरत है दूसर दशा म
डरत है अपन महल के छज्जा पर
डरत हैं वायुयाना के शून्य म
डरन है दवाई स
डरत है अपन अगरक्षक की जम्हुहाइ स
विनन बेचन ह सनापतिया क घनिष्ठ अभिवादा स

यह आवाज
जो चक्कर लगाती है सुरगा मे
पीछा करती है इन दासानुदासा का
गोपनीयता की एक बात
उनक कान म गुरसुराती है

व डरत ह शयनकक्षा म
वे डरत है बदलत हुए अपना लिबास
कही इसके साथ
उनर नही आय प्लास्टिक की खाल
सिलीकोन क बाल
व जिन्च होकर भूल गय है चाल

डरते हैं
व डरत है

अभी कितने और आश्चय होंगे

अभी कितन और आश्चय होग
यह चुप्पी ता सबसे ताज़ा धक्का है
तुम्ह डुबान के लिए

एक दिशा स चली ह गालिया
सराहा है जिह जनता न
"राष्टीय प्रतिष्ठा क लिए एक ठोस कदम" कह कर।

बहुत अजोब लगता है
अपन दोस्त का नाम पुकारना
यह जानत हुए कि वह भी सीढियो के अधबीच
रुककर सास ले रहा है
और हरक सास भविष्य क लिए एक चिंता हो सकती है।

भव्य आयोजना के बाद
अखबारा की भौडी शब्दावली म
व इसे "शानदार बल्लेबाजी" कहते है
व सारे पाठक वग को बाल जगत समझकर
परिकथाओ के अजूबे उद्यान दिखलाते है
वे साक्षात्कार के प्रश्नो का जवाब देत वक्त
निजी सम्पत्ति के बार म कोइ भी बयान नही देत।

सब जानते ह पत्रकार स्ट्राग काफी पसन्द करते है
और विदशी चीजा के लिए
वे अपनी रुखी भाषा का चुपडकर परास सकते है।

आश्चय जो आकपक होता है
किसी नितान्त अजनबी को अपनी उनियान दिखलाता है
या समय निकालकर

किसी निकट आती प्रेमिका के सामने
अपने सफेद पके बाल तोड़ने बैठ जाता है।

शायद इसीलिए मोह माया से विरक्त लोग
खिजाब लगाते हैं
वे 'विरक्त" होते है इसीलिए अपने पुत्रों
विपुत्रों को वाजीकरण रसायनों का पिटारा देकर
स्तम्भ शक्ति के परिणामों को देखते हैं
उनकी आखें रहती हैं खुली
उनके ही रचे आश्चर्यों का स्थानापन्न देखने के लिए।

आधी की तरह उठते ह उनके अग्निज
सूक्ष्म अणु उदभिज
लगता है कोई प्रबल प्रचण्ड ग्रह
हमारे उपग्रह के इद गिद फेंकने लगा हो
जहरीली गैस और रेत

लगता है एक बिल्कुल नया जादूगर
अपनी जीर्ण शीर्ण जादूगरनी मां को
स्तम्भित कर रहा हो—
'मां तूने जितना सिखाया
उससे कहीं ज्यादा सीख गया हूं मैं !!'

विना कथा के

विना कथा के सब कुछ जगत है

सारे सूत्र छिन भिन
सारे तत्व अवयव
एक दूसर स दूर-दूर अपरिचित

उदास पहाडा स बेखबर
बजती ह घटिया
और घटिया स अविचलित
बोलता है साइरन

गाडिया दौडती हुइ
और सवारिया
नीद के दिक काल म
गाडिया से मुक्त

वक्षो की असम्बद्ध प्रतिमाए
अपने अपने जड जीवन मे व्यस्त
सगठन की सभावनाए बिलकुल क्षीण

एक क्षीण कथानक के लिए
विलखती घटनाए
निरन्तर रोचक दुखात
विरचक त्रासद एकात
दुबलतम नायक निगुट राज्याध्यक्ष की तरह
अशुभ सूचना से आशक्ति

विना कथा के प्रारम्भ
अत म घुस जाता है
जसे क्रातिकारी फ्रिज म

हवाई यात्रा

कुछ बनाने में देर होगी
कुछ रचने में बहुत समय लगेगा
इससे पहले वे नगरों को निर्जीव करने वाली
गैस बना लेंगे।

वे बहुत जल्दी ही एक नकली शहर बनाकर
एक नकली लड़ाई दिखा देंगे
एक नकली चित्र को भीड़ भरी बस की छत पर
घुमायेंगे चारों तरफ "इतिहास लौटता है"।

इससे पहले कि उनका अमूर्त
किसी जोरदार मूर्त में विराटतम हो
वे कहेंगे शासन परम लोक कल्याणकारी है
परम सत्य है मौलिक कृत्रिमता भी
इससे पहले कि हम अपनी रीढ़ों में खपच्चियां बांधे
खड़े होकर पत्थर फेंकें
अखबार छाप चुके होंगे उनके नाम
मुफ्त बंट चुके होंगे पोथियों के बण्डल
उनके पत्रकार उनके समीक्षक
साहित्य की खाड़ी का मार्ग
बंद कर चुके होंगे
अपने भारी युद्धपोतों से
कम पड़ा अगर कोई चमकीला अम्बर
फ्रांस और अमरीका
पहले से ही देने को हैं तत्पर।

इससे पहले कि हम पत्र लिखें
बुलेटिन भेजें, सहयोग राशि मांगें,

भाइ शांतिनगर के इस सम्मेलन में जरूर आए
महत्वपूर्ण कार्यक्रम तय होगा
इसके पहले कि हम उधार लें एक कम्बल
साफ करें तौलिया रखें नयी ब्लेड
साबुन की सफरी टिकिया
व हवाई यात्रा के अग्रिम टिकट भेजकर
दल बदल करवा लेंगे

अजीब बात है
इस जन्म भी हैं हम छोर पे हमारे नाम पर
हम न इधर न उधर
लेकिन कदाचित नहीं छोड़ सकें
हवाई यात्रा का यह पहला-पहला अवसर ।।

जलप्लावन

डूबना जरूरी है
नेपथ्य र जलप्लावित हो जाना
अटूट अनवरत मायाजालो म से
एक नन्ही उमग पा लेना
आसुओ क बाद
हर सूखी आख को अपनी अगुली स पोछ देना
जरूरी है

वे इतना क्या गरजते है ?
वे तरस खात है
इस मूख साधनहीनता पर ?
अवसर खो दन के बाद
अपन टूटे बिखरे शरीर को माला की तरह
फिर स गूथना पिरोना
उनके लिए हो न हो तुम्हारे लिए
जरूरी है

आओ इस दरवाजे को धक्का देकर खोल दें
जरा सा रगड दें पुरानी कुडियो को
चूलो को जग नितार दें
जब यह खुलगा तो दशन होगे
एक विराट तत्पर नग्नता मे
वह नग्नता
उम्र के यू ही दबे दबे गुजर जाने से प्रगट हुई है

शोभायमान जनशत्रु
दया दिखलाते निकले है
उनकी जगत चिता अपन पुत्रो प्रपुत्रो के लिए

तैरती है
और यह जलप्लावन
रुके हुए जीवन का प्रतिबिम्ब है
कुछ सड़ता है जो दर्पण धूमिल कर देता है

कुछ डूबा हुआ बाहर निकलने को है
जिसे घबरा देकर
तल में ही दबोचकर मारने का षड्यन्त्र है

प्रतिरक्षा

छायाओं के पहाड के नीचे
चल रहे हैं
भारी थके हुए कदम
सिमट रहा है सपना का जाल

अब आदमी खुद जगल बनकर
जला रहा है एक एक फूल
बम हथलियो पर धरे
खडे है राज्याध्यक्ष

वे प्रतीक्षा म हैं
कब दबी हुई लकडिया
कोयला बनकर बाहर निकलें
कोई माने या न माने
वे कहते हैं—

आदमी को बचाने के लिए आदमी को मारना जरूरी है

प्रपच तन्त्रम्

वो ताजा मनी हुइ पीनी मिटटी म
अपन पाव रखता है
छपत नहो ह पाव

हाय यह क्सा तन्त्र है
तत्व अपनी तात्विकता भूल गय है।

स्पश होता है
माना सूखकर गिरा है कोइ पत्ता
सडक सूनी निचाट
नही बढाती अपन साथ साथ
लकिन लौटाती है परतन्त्रता के युग म
बुहारती ह
काली क्षीणकाय सर्दी म ठिठुरती हुइ हरिजन
सूखी आखा म रखत ह कुम्हार
मिटटी भी अभिजात हान के दव म
नगाने नही दती हाथ
रखन नहीं दती पाव।

सुबह से ही अश्लील सगीत
गाडियां म भर कर छिडका जा रहा है
जलन लगा है आकाशदीप
ताकि वनवासियो के श्रम को
व अपना शहरी चन्द्रमा कह सकें।

केवल आख बना देने से क्या होता है

कवल आख बना दन स क्या होता है ?
दृश्य भी तो होना चाहिए
विविध रगा म छटपटाता ।

खून के कई रग होते है
लाल तो सिफ नाटक है
और कद रगा म क्रूरता अपना नाच दिखाती है ।

केवल आख म क्या हाता है ?
देखकर भी अनदखा किया जा सकता है ।
खजूर का गडता हुआ काटा
अधी आख को क्या कुछ और बनाएगा ?
जलता हुआ सूखा जगल ?
केवल आख से क्या हाना है ?
सबूत के लिए राख भी होगी
और व उस जला हुआ धोखा कह दगे
हड्डिया का चूरा और बच्चा के कामल मास के टुकड
इस शताब्दी के महाभोज मे व्यजन हागे ।

केवल आख से क्या होगा ?
बबरता न बहुत पहले ही जिसे फोड दिया है ।

जनान्तिक

1

दुख का विस्तरित क्षेत्र
गहरा खुदता जा रहा है
कौन पुकारता है ऊपर स
पहाड पर अधढहे कमरे म

शहर परछाइ वन गया है
अन्तहीन शीतयुद्ध की
छुरे घोपन की खबरें
चमगादडा की तरह उड रही हैं

चेहरा पर अब एक अजनबी सन्नाटा है
किसी से भी तारीख पूछना
मानो वहुत बडी मडक दुघटना है

क्या मैं वह तालाब नही हू
जिसका पानी सूख गया है
वह कटा हुआ ठूठ
जिमे देखन पर विराग होता है ?

रग नही है गहरे गीलेपन मे तराशे
पूछे हुए है सब सूखी खुरदरी झाड आ स
एक वियावान

किसी दूरदराज की प्रसन्न सभ्यता स घबडाया हुआ
घाटी मे नदी को पुकारता है

2

मजदूर लौट गय है हार थके

अपनी झोपडियो के अधेरे म
तज हवा की कारे दौडती हुइ
हिला जाती है जिनकी छते

जहा धूल और बच्चे म कोई फक नही है
कोई सग साथ नही है
एश्वयशाली सरसा और क्षयग्रस्त लडकी का

जहा दाशनिका के उवर दिमागा की चौधयाती अवरक
अभी नही पहुच सकी है
उनकी खानें खन्दकें जिनक लिए खुली है
उनके सरस्वती भवना की सुखद बरसाते
जहा अभी नही हुई हैं

ये बस्तिया शहर की रीढ पर
उदबन धसकती जा रही है

3

एक दुलभ पुस्तक के चोर लिय जाने की तरह
मनुष्यता वहा अनुपस्थित है
निर्जीव भालेपन की प्रशसा करते हैं
शातिर सम्पन्न सत्ताधारी
उनके बखाडा अडडा पर भयानक सगठन है
कुत्सित तर्कों का

वे पुस्तक ही नष्ट करना चाहत हैं
ताकि उससे कही सशय फिर से नही खडे हो
वे मुस्काना आश्वासना से भग्ना चाहत है
कातर असहाय भूखे लोगो के पट
व फटे हुए कुर्ते पहिन कर
नग्नता को सावकालिक सिद्ध करना चाहते है

4

उन्हान आग तक चुरा ली है

अब क्या होगा ?
ऐसी निराशा से उबरने के लिए मुस्कराओ
समय को स्थिर बैठ जाने दो
तुम जानते हो अकेले लडने से कुछ नही होगा
दूर तक इस अंधेरे मे देखने के बाद
शायद तुम कल के घमासान के लिए तैयार हो सको

गगा

पवित्र है यह जल
जिसे वह अपने बेटे के लिए माग रही है

अपार कालाहल उत्साह उत्सव
उड रहा है रथ
डालता रक्ताक्त चेहरा पर
छीटे पवित्र जल के

बेकाबू नही है घोडे
बेकाबू नही ह बेटा
इस महाभारत म पहचानता है
शत्रु कौन है कौन अभिजन

वह गगा के पवित्र जल का बटवारा
नही होने दना चाहती
लेकिन पानी म मिल गया है रक्त
फल रहा है अगर धूम
बिखर रही है सुगध

गगा गगा
जो नहाकर निकली बाहर
अध नग्न ठिठुरती
तो अपाहिज कुबडे साधुआ न कहा
हमारी है गगा
यह पकायगी हमारा भात
पवित्र है यह
यही हमे खिलायगी

जमीन

हसी एक गहरी डूबी लहर
सूखी पपडी बनी कीचड की
उड गयी चिडिया
उड गय बच्चे तोता क

जमीन के भीतर
शाति का बम
ढूढता मौसम था
टूटकर बर्फीली सामाजिकता में जम गया

ऐसी ही रही जमीन
कही धुआ कही कोहरा
कही पत्थरो की पिसी राख
कही हडिडया पर सफेद बुर्राक
चढाय मास
ऐसी ही रही विधवा एक
हथेली पर लिय टूटी दाढ

सरसो के बीच म
नही रहा ठिठुरता बच्चा
झापडी की गोद मे
धीर धीरे गरम होता गाव
ठिठुरे पावा स पटा रस्ता
नही रहा दखता दूर से
एक किला
हाथी क मस्तक पर बैठा
गर्वीला महावत और झराखे की
नक्काशी से झाकता लोलुप राजा

नही रही ज़मीन तराती
सगमरमर के कुड मे
फुदकाती अबोध मछलिया

एक ठोस जमा हुआ सन्नाटा
सूरज की पीपल के नीचे फटा हुआ
बहुत बडा छद
बिल्कुल सपाट गुमसुम
सिफ झाड पाछकर खिसकाता हुआ
सिहासन
चापलूसा की चार हज़ार मीटर की
बाधा दौड मे
सिफ एक पट्टीनुमा ज़मीन
राजधानी की तरफ

अथाह समुद्र भरा रहा
चारा ओर
अथाह शू य म टकराते रह
ग्रह उपग्रह
अथाह उनकी हिंमा खोजती रही
नयी ज़मीन नया जीवन
विस्फाट की सुलगती बत्ती म
करती रही खान जैस करती है
प्रतीक्षा

सूर्यास्त 2000

1

वहा पहुचने का स्वप्न सुदर था
आखे खुली और वह
डरावना दिखाई देन लगा

2

चढाई लगातार चढाइ
सास फूलते वक्त कुछ भी खाया
तो सास नली मे फसकर
धुर नीचे गिरे

3

फले हुए पानी के कइ चटखे हुए
बडे शीशे
बीच बीच म पहाडिया
लकिन फिर भी शीशा शाशे म मिल कर
एक पूरी नदी बन गया है

4

पहाडिया पहाडिया पर चढती हुइ
चली गयी है आग धु ध म
वस हा कभी आदमी सर्दी मे
झापडियो का पार करता निकला था
कच्ची सडक पर
फिर सूरज डूबा धीरे धीरे
गिरते हुए

7

लगा था यहा कुछ उथला पानी है
एक चिल्लू म भर जायगा
लेकिन यह पाव
अचानक दलदल म धस गया
पाव को हाथ म पकड कर
निकालन म
पीठ विद्राह करती है
चारा तरफ
निर्विकार धोंका का जगल और दूर
गरुई पत्थर की बनी एक दवी
चारा तरफ
सारसा काआ तनाद आर यहा
मेरा यह पाव
इस निश्चल प्रतीक्षा मे
वह एक मछली काटन लगी है
यह पाव पाव

8

मैं सूरज हू मैं जो मक्खी
बहुत ऊच उडती हुई
लौट रही हू नीचे
मै खाजती जिसे
वह ऋषि झील के किनारे
सफेद बगुला जो
काले वनवामिया को ठगता
मैं मक्खी
उसके मनो को जपती
उससे बहुत ऊपर
धूप के सुनहले आश्रम म बहुत सुनहली
क्याकि मैं सूरज हू
पानी मे तरत सलेटी कछुए के लिए

एक पीला बादल है
जिसकी झालर में
फसी एक सुनहली मछली
रात के आते ही
शिकारी कुत्तो की भौं भौं सुनो
सुनो वे एक मछली को भी मारेंगे
इसलिए कि अखबार के बीच पिस कर
उसने महा महिम का नाम गदला कर दिया है

□□